|| जय श्री विमर्श चालीसा ||

दोहा ~ हे गुरुवर सच आप हैं , हम सबको वरदान |
ज्ञान गंग में करा रहे , जन - जन को स्नान ||

नगर जतारा जन्म है , पिता सनत का गेह |
मात् भगवती से सदा , पाया अनुपम नेह||

जय विमर्श अब हैं जगत , वैतरणी का नाम |
चलते फिरते तीर्थ हैं , रुकें जहाँ वह धाम ||

आप शरण में लीजिए ,विनती करे "सुभाष" |
अंधकार के मार्ग में , देना सदा प्रकाश ||

चौपाई छंद में चालीसा -

जय विमर्श जी मेरे गुरुवर | ज्ञान शिखर आगम के तरुवर ||
सम्यक दर्शन की प्रति मूरत |ज्ञान चारित्र की उजली सूरत || (1)

बूँद बना जीवन यह पानी | हर मानव की यही कहानी ||
महाकाव्य इस पर रच डाला | कालजयी रचना है आला ||(2)

जिनआगम की राह बताते | चौथी युग चर्या अपनाते ||
सरगम जिनके कंठ विराजे | रचे छंद शुभ प्रतिदिन ताजे ||(3)

आप आशुकवि मन अति कोमल | हरी भरी सब मन की कोपल ||
ज्ञानगंग की अविरल धारा | रहते जिसके भव्य किनारा || (4)

आत्मसाधना अनुपम चिन्तन| जन-जन करता जिनका वन्दन ||
विश्व आपका ऋणी रहेगा | मोक्ष मार्ग जयकार करेगा ||(5)

अलग - अलग जो बनते ग्रंथी | बने जिनागम वह सब पंथी | |
बात सरल यह सदा बताते | सूत्र एकता को अपनाते ||(6)

महावीर की वाणी मानो | जिन शासन को अब पहचानो ||
अलग-अलग मत राग अलापो | बात एक-सी मिलकर थापो ||(7)

आज समय हालात सुनाते | रहो एक सब यह चेताते ||

नहीं कलुष के फेर न पड़ना | रहता गुरुवर का यह कहना ||(8)

जैन धर्म का ध्वज लहराना | जिन शासन जयवंत बनाना ||
रखो एकता अवसर आए | समय काल जब संकट लाए ||(9)

प्रचर-गमथ-गतिपथ पहचाना | गुजर- घाट सब नेक समाना ||
एक भाव सब कहने मिलते | शब्द अनेकों भाषा खिलते ||(10)

गुरु विराग के है लघुनंदन | महावीर चरणों के चंदन ||
शांतिनाथ को देकर नाबा | है अहार के छोटे बाबा || (11)

संघ चतुर्विध संग में चलता | समोशरण -सा जन को लगता ||
प्रवचन में जब रस है खिलता | आत्म बोध का अमरत मिलता || (12)

वाणी गुरु की मन को भावे | आकुलता मन से हट जावे ||
मिलती चिन्तन में गहराई | थाह सभी ने यह है पाई || (13)

ज्ञान सरोवर में जल बढता | कमल सदा ऊपर ही चढ़ता ||
ऐसी ही गुरुवर की काया | जब भी देखा अनुपम पाया ||(14)

आगम ग्रंथों के अनुवादक | देव शास्त्र गुरु के आराधक ||
पापी मन पावन हो जाता | जो भी गुरु चरणों में आता || (15)

गुरुवर के चरणों की धूली | नष्ट करे पापों की शूली | |
जिसने आकर चरण पखारे | जग तापों के कष्ट निवारे ||(16)

चरण कमल में शिर धर दीन्हा | गुरु ने उसको अपना लीन्हा ||
राह दिखाई उसको न्यारी | मोक्ष मार्ग की दी तैयारी ||(17)

वचन सदा आल्हादित करते | नूतन ऊर्जा मन में भरते | |
जो समीप चरणों में रहता | अविरल गंगा नहवन करता || (18)

त्याग तपस्या मूरत लगती | चर्या चरणों में आ बसती | |
पल- पल जिनका करे तपस्या | रहे वहाँ पर कौन समस्या || (19)

चरण आपके मंगल करते | सदा अमंगल जन के हरते ||
सिद्ध शिला के हो अधिकारी | हम सब सेवक हैं वलिहारी ||(20)

सुनते श्रावक पावन वाणी । जो होते आतम कल्याणी ॥
मोक्ष मार्ग के बनते पाणी| आते सुनने को जो प्राणी ॥(21)

सदा साधना को अपनाते । आदर्शों के चिन्ह बनाते ॥
लक्ष्य आपका सिद्ध शिला है । जिसमें निज का छिपा भला है ॥(22)

भवसागर से पार लगाना । शरण वीर की शुभ बतलाना ॥
गुरुवर सच्चे हो उपदेशक । ध्यान योग के हो परिवेशक ॥(23)

हटवें मन से सदा विकारें । अपने मन में नेक विचारें ॥
निज के सँग जग हो कल्याणी| रखते मन में शुभकर वाणी ॥(24)

सदा ध्यान सामायिक करते । भव पीड़ा आतम की हरते ॥
जहाँ प्रतिक्रमण रहता पावन । गुरुवर लगते हैं मन भावन ॥(25)

आठ अंग हैं योग सुनाते । पहला जिसमें 'ध्यान 'बताते ॥
कहें 'धारणा'- 'यम' -'आसन' के । और 'नियम'भी निज मन के ॥ (26)

कहते 'प्रत्याहार' सुहाना । सप्तम 'प्राणा़याम' बताना ॥
गुरु विमर्श जी परिषह सहते । श्रेष्ठ 'समाधि' अंतिम कहते ॥(27)

कई ग्रंथों को सहज बनाया । अर्थ बताकर है समझाया ॥
लिखे काव्य है कवि भी बनकर । धन्य सभी होते हैं सुनकर ॥ (28)

कई ग्रंथ भी रच डाले है । सभी मोक्ष के हित वाले है ॥
नमन ' सुभाषा' सबको करता । सदा उर्जा मन में भरता ॥ (29)

'रयणसार' की टीका देखी । आतम के हित सबने लेखी ॥
पढ़ते जब 'जाहिद की गज़लें '| आत्म तत्व की लगती फसलें ॥ (30)

भक्तामर की महिमा हितकर । "मानतुंग के मोती" लिखकर ॥
हम सबको है भक्त बनाया । आदिनाथ की महिमा गाया ॥ (31)

प्रवचन का साहित्य बड़ा है । लिए ग्रंथ आकार खड़ा है ।
"योगोदय" "रत्नोदय" देखा ।जीवन को यह हितकर लेखा ॥ (32)

"शब्द शब्द अमृत" है पुस्तक | " देशव्रतोदय"को नत मस्तक ||
"साम्योदय" को जिसने जाना | निज जीवन उसने पहचाना || (33)

"भरत बने घर में बैरागी" | पढ़कर पुस्तक किस्मत जागी | |
"गूँगी चीख" अनोखी पुस्तक | जिसे झुकाएँ हम सब मस्तक || (34)

"प्रतिक्रमण एक अनुचिंतन" है| कहती यह पुस्तक का मन है ||
पाँच भाग है "रणयोदय" के | पढ़कर जागे भाग्य निलय के || (35)

काव्य पाठ के पढ़कर संग्रह | जन- जन देता है यह कह ||
आप महाकवि गुरु विमर्श है | नगर जतारा एक हर्ष है || (36)

लिखे "समर्पण स्वर" अलबेले | "गीतांजलि" में गीत नबेले ||
लिखा "आइना" काव्य निराला | "वंदनीय गुरुवर" उजियाला || (37)

"कर लो गुरु का अब गुणगाना"| लिखा काव्य लगता गुणधाना ||
"खूबसूरत लाइने" पढ़कर | सभी काव्य लगते बढ चढ़कर || (38)

"अप्पोदया प्राकृत टीका " | ग्रंथ निराला सबसे नीका ||
काव्य अनेकों आप लिखे है | बढ़ चढ़ कर ही सभी दिखे है || (39)

नमन " सुभाषा" पुनि-पुनि करता | भाव सहित चालीसा लिखता ||
लिखने में त्रुटि जिसको आबे | करें सुधारा मन जो भाबे || (40)

दोहा -
राह कहो या *रास्ता* , *पथ* कह दो या *पंथ* |
मार्ग कहो या *मग* कहो, पर मानो जिन ग्रंथ ||

चतुर्मास है आपका , स्वर्ण जयंती योग |
नगर जतारा धन्य है , धन्य यहाँ के लोग ||
चालीसा पढ़ भाव से , करना गुरु प्रणाम |
जय विमर्श जी बोलना , पाना अनुपम धाम ||
चालीसा चालीस दिन , पढ़ना बस इक बार |
गुरु विमर्श होगी कृपा , होगें कष्ट निवार | |

लेखक / कवि - सुभाष सिंघई एम०ए० (हिंदी साहित्य)
जतारा (टीकमगढ़) म०प्र० , मोबा० 9584710660